

पर्यावरण

हम सब पर्यावरण से भली भाँति परिचित हैं। पर्यावरण वह है जो प्राकृतिक रूप से हमारे चारों तरफ है और पृथ्वी पर हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करता है। जो हवा को हम हर पल साँस लेते हैं, पानी जो हम अपनी दिनचर्या में इस्तेमाल करते हैं, पौधे, जानवर और अन्य जीवित चीजें यह सब पर्यावरण के साथ आता है। जब प्रकृति ऋतुचक्र के साथ किसी भी गड़बड़ी के बिना चलता रहे तब यह पर्यावरण स्वस्थ वातावरण कहा जाता है। प्रकृति के संतुलन में किसी भी प्रकार का बाधा वातावरण को पूरी तरह प्रभावित करते हैं, और स्वस्थ मानव जीवन का नाश कर देता है।

प्रकृति हमारे अस्तित्व का आधार है। इसका संरक्षण हमारा कर्तव्य है। हम प्रकृति का न करें हरण। पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है। वह हमारे जीवन में बहुत सहायक देता है। लेकिन मानव इसकी रक्षा नहीं करते हैं। मानव अपने स्वार्थता के लिए प्रकृति विभव का चूषण करते हैं।

आधुनिक युग में मानव द्वारा किये गये वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, मिट्टी प्रदूषण, पेड़ों की कटाई, अम्ल वर्षा, तकनीक की प्रगति आदि, अन्य खतरनाक प्राकृतिक आपदाओं के रूप में हमारे सामने आते रहते हैं।

हम पेड़ों और जंगलों का नाश करते हैं। यह ऑक्सीजन की कमी का कारण हो गया। भविष्य में हमें आक्सीजन भी खरीदना पड़ेगा। ऐसे, मानव जलाशयों को दूषित करते हैं, खेतों को ढककर उसका नाश करते हैं प्लास्टिक का दुरुपयोग करके मिट्टी का नाश करते हैं। इनसे प्रकृति का संतुलन नष्ट हो जाता है।

घाटी, सागर, दरिया, पहाड़ आदि से धन्य है हमारी धरती। पर्यावरण की सुरक्षा को अपना कर्तव्य समझकर अगर बचे हुए पानी, मिट्टी, जंगल आदि की सुरक्षा पर ध्यान दें तो हम अपनी प्रकृति को बच पायेंगे। इस के लिए हम सब मिलकर कोशिश करेंगे।

जोयल जोसफ IX A